चन्द्रमुखी

अट्टा-पट्टा चन्द्रमुखी दाइकेँ पाँचटा बेटा।

मुदा चन्द्रमुखी दाइकेँ पाँच टा बेटा नहि भऽ सकलनि। प्रथम सन्तानक जन्मसँ तीन मास पूर्वहि देहान्त भऽ गेलनि। चन्द्रमुखी दाइ पछाड़ खा खसली। लोक सम्हारलकनि। बुझौलकनि -अहाँ कि मात्र अपना देहे छी ? क्यो आर अछि अहाँक संग, तकरा किएक बिसरै छी ? उठू, मोनेकेँ काबूमे आनू।

चन्द्रमुखी दाइ उठि बैसली । ताही क्षण बुझि पड़लनि जे पेटमे क्यो कुदकि रहल होनि। पीड़ारहित, गुदगुदवैत। चन्द्रमुखी दाइ ममत्वसँ भरि उठली । पेट पर हाथ हँसोथि, मोनहिमोन बजली -'खेलाउ'।

बेटाक पहिल क्रन्दन जखन चन्द्रमुखी दाइक कानमे पड़लनि जेना ओ क्रन्दन नहि भऽ सूचनाक हुकार छल -'हम आबि गेलहुँ।

चन्द्रमुखी दाइमे हठात् दुनियाँक बल आबि गेलनि। पड़लि रहलासँ काज नहि चलतनि। नान्हिटा कोंढ़ी टुकरामे लटपटायल पड़ल छल ककरा भरोस पर? चन्द्रमुखी दाइकेँ ओकरा विकसित करबाक छलनि। जेहेन परिचर्या, तेहेन सुन्दर फल।

''फूल। हमर फूल। हमर रक्तसँ सीचल, हमर दूधमे बोरल।''

क्यो कहलकनि -''हे बदामक दालि जुनि खाउ। बच्चाकेँ वायु करतैक।''

चन्द्रमुखी दाइ बदामक दालि खायब छोड़ि देलनि।

''हे बच्चा गोंगियाइत अछि। प्राय: दाँत उठैत छैक।''

''कनिक कऽ दालिक पानि चटा देल करियौ। दाँत बहरयबामे सुभीता हेतैक। बिन छौंकल दालि।''

चन्द्रमुखी दाइ नित्य छौंकबाक पहिनहि बेटाकेँ दालिक पानि चटायब नहि बिसरथि। बोलारय देथिन -''हमर एतनीटा फूल, फूल औ फूल । लियऽ चाटू। दाँत बहरायत तखन ने दालि चीखब।''

फूल जोरसँ किलकारी देथि। चन्द्रमुखी नेहाल भऽ जाथि।

''भौजी। किताबमे लिखल छैक जे नित्य माछ खयबाक चाही। माछ खयलासँ बुद्धि बढ़ैत छैक।

चन्द्रमुखी दाइ माङिकऽ-चाङिकऽ जेना होनि तेना एकटा पोठी सुतारिये लेथि अपन फल लेल।

''छोट जन, हम अहाँक कमीज पैंट नित्य साबुनसँ खीचि देल करब, लोहा सेहो कऽ देब। अहाँ हमर बच्चाकेँ दू अच्छर पढ़ा देब ?''-चन्द्रमुखी गामक सम्पर्कक एक किशोर देयौरसँ कड़ार करौलनि।

टोल, पड़ोस, दुरस्थ सम्बन्धिक वर्ग, सब दिस ताक लगौने रहथि चन्द्रमुखी । जखन जकरा कतऽ कोनो कार्य-प्रयोजनक भीड़ होइ जा कऽ खटि आबथि। जे पारिश्रमिक भेटनि ताहिसँ फूल लेल माछ-भातक जोगार करथि।

''हे, बेटा अहाँक तेज अछि। एकरा आगू पढ़बियहु।''

चन्द्रमुखी दाइ राति भरि जागि चरखा काटऽ लगली।

कम-सँ-कम बीस रुपया मास तऽ चाहबे करी।

स्वराजी हवामे चन्द्रमुखी दाइक मोन धुक-धुक करनि। प्रति बेर फूलकेँ कहथिन -''बच्चा, अहाँ ओहि सबसँ एकदम फराक रहब। अपन विधवा मायकेँ मोन पाड़ब। हमरा आर क्यो नहि अछि।''

फूल आश्वासन देथिन। चन्द्रमुखी दाइ कृतकृत्य भऽ जाथि। भड़ारमे जे किछु रहनि, आनि कऽ दऽ देथिन।

''बच्चा ई कनिये घी रखने छी, अहाँ लेल। माछ खाइ छी किने सब दिन ?''

''हँ, आ तोँ ? किछु खाइ-पिबै छँ कि सभटा हमरे दऽ दैत छँ ?''

''दुर, बिन खयने क्यो रहैत अछि ?''

मुदा चन्द्रमुखी रहैत छली। आइ एकादशी, काल्हि चतुर्दशी, परसू निराहार। आ पारण लै तुलसीक पात भेलनि पर्याप्त। विधवाकेँ एतबे बहुत। अनेरे फाजिल खर्च।

अदौरी जकाँ खोंटि-खोंटि कऽ खर्च करथि चन्द्रमुखी दाइ। एखन बहुत खर्च बाँकी छलनि। बेटाकेँ ओकील बनयबाक छलनि।

ओकालति पास करैत देरी बेटा खर्च लेब बन्द कऽ देलकनि। किछु दिन बाद प्रति मास पाँच टाका पठबऽ लगलनि। आरो किछु दिन बाद दस टाका।

मुदा चन्द्रमुखी दाइ अपन खर्च नहि बढ़ौलनि। ओ दू कट्ठा जमीन किनलनि। आमक बाड़ी बनौती। कम-सँ-कम एकटा पक्का घर बनबऽ चाहैत छलीह। अतिचारक बाद बेटाक विवाह करौती। पुतहु माटिक घरमे पयर रोपतनि ? नहि, बेटा-पुतहुक कोठली पक्काक रहतनि। अपने रहती कच्चामे । फूल कतबो आपत्ति करथू।

फूलक वश चलनि तँ एखने चन्द्रमुखीकेँ मधुबनी लऽ जाथि। मुदा चन्द्रमुखी राजी नहि भेलि। बजली - "गाम घर बिलटि जायत ?

"कोन एहेन खजाना छैक जे बिलटि जायत।"

"जतबे अछि। जखन दू गोटे भऽ जायब तखन पार बान्हि कऽ एक गोटे गाम तऽ एक गोटे मधुबनी।"

एक छन लेल फूल लजा गेला। बजला- "जेहन विचार होउ, ओतऽ हमरा हरदम मोन पड़ैत छैँ।

"हम मोन पड़ै छी ?"

"तऽ आर के मोन पड़त ? के अछि हमर अपन ? जहियासँ ज्ञान भेल, तोरा खटितहि देखलियहु। दिनकेँ दिन नहि रातिकेँ राति नहि बुझि खटैत। एकटा भनसिया किएक ने राखि लैत छैँ ? मात्र दू टाका मास तऽ लगतौ। ककरा लेल एतेक बचबैत छैँ ?"

"नहि, से नहि। एकटा पेट लेल कतबा काज ? आ सेहो नहि रहत तँ समय कोना कटत ?''

"तँ तऽ कहैत छियौ चल हमरा संग। ओतऽ सिनेमा देखबैँ। कीर्तन सुनबैँ । सुन, दरभंगा चलबैँ ?"

- "आब सब किछु अतिचारक प्रात।"

- "जेहेन विचार" - फूल फेर लजा गेला ।

फूलक गेलाक बाद कतेक दिन धरि हुनकर गपशप कानमे घुसिआइत रहनि। चन्द्रमुखी गदगद भऽ भाषथि -"ककरा छैक हमरासन बेटा ? लाखमे एक अछि। कतेक ममता छैक हमरा लेल। नहि, हम मधुबनी नहि रहब। दू-चारि दिन पाहुन -पड़क जेकाँ रहब। बेटा-पुतहुकेँ स्वच्छन्द छोड़ि देबैक। ओकरा सभ नव वयस। इएह तऽ वयस थिकैक खयबा-खेलयबाक।

ओहिमे बूढ़ लोकक मुड़ियारी देब महा अनुचित। हम एतऽ अपन गाछी देखब। पोता-पोती आम खाइ लेल आओत। एकटा महीस कीनि लेब। जेना सिंहबाड़सँ महन्त मिसर के अठमा दिन पर भार अबैत छलनि - दही, माछ, मधुर, केरा। धन्न सासुर नहि तऽ की छलनि महन्त मिसरकेँ? आब तँ सुनै छियै एतहु सड़क बनतैक। पाँच वर्षमे कहाँ दन रिक्सा चलऽ लगतैक। तखन यदि चाहब तऽ सब दिन माछ, दूध, दही, तरकारी एतऽ सँ पठा सकबनि। यदि अपन घरसँ बहरयतनि तऽ पाइ खर्च कऽ किएक किनता फूल ?"

चन्द्रमुखी रुपैया जमा करऽ लगली। अपना ऊपर जेहो खर्च रहनि , तकरो घटा लेलनि। कतेक दिन चूड़ा भिजा, नोन -अचारक संग खा लेथि।

जाहि दिन फूल गाम आबथि, चन्द्रमुखी खूब मोन लगा कऽ भानस करथि। विधवा छली, तैयो अपनहिसँ माछ रान्हथि। तोड़ी - आमिलक झोर दऽ कऽ। फूलकेँ बड़ पसिन्न छलनि।

माछक झोरमे भात सानि कऽ हाथ बारि लेलनि फूल।

"की भेल ?"

"दर्द। पेटमे।"

"ओहू बेर दर्द दऽ कहने रही। जमाइनक अर्क लेबो कयलहुँ ?"

"लेलहुँ तऽ, मुदा किछु भेल नहि।"

"थम्हू, हम नेबोक खदकी बना कऽ दैत छी ।"

चन्द्रमुखी हबर-हबर नेबोक खदकी बना कऽ देलथिन। फूलकेँ किछु आराम बूझि पड़लानि। ओ हाथ धो घरमे पड़ि रहला। चन्द्रमुखी पंखा हौंकऽ लगली। फूलकेँ नीन भऽ गेलनि। चन्द्रमुखी लक्ष कयलनि फूल दुबरा गेल छला। आँखिक तऽरमे स्याह पड़ि गेल छलनि। बड़ खटनी पड़ैत छनि। एतेक खटबाक कोन प्रयोजन ? थोड़बहि कमाउथ, खाउथ, मौज उड़ावथु।

चन्द्रमुखीकेँ नहि चाहियानि पाइ। जकरा फूल सन बेटा रहतैक, तकरा कथीक अभाव ?

"बच्चा अहाँ हमरा अधे पठाउ।" - विदा हेबाक बेर चन्द्रमुखी बजली।

"किएक ?"

"खर्चे नहि अछि तऽ बेशी किएक लिअउ ?"

"खर्चा तऽ हमरो नहि अछि।"

"नहि बच्चा। अहाँकेँ हमरे सप्पत थिक। खयबा-पिउबामे कोताही जुनि करू।"

"तोरा के कहलकौ जे हम खयबामे कोताही करैत छी ?"

"क्यो कहलक नहि मुदा ...."

"पेट जे दुखायल ?"

चन्द्रमुखी मूड़ी डोला स्वीकार कयलनि।

"से तऽ आइ दू माससँ भऽ रहल अछि। खाइ छी तैयो, नहि खाइ छी तैयो ''

"दू मास ? बच्चा, अहाँ एक बेर दरभंगा जा कऽ शीतल बाबूसँ देखा आउ। जे पाइ लागत हम देब।"

फूलकेँ हँसी लागि गेलनि। बजला - "बड़ पाइ छौक तोरा ?"

"हँसी नहि, सत्ते कहै छी । अहाँ छोड़ि हमरा अछिये की ?"

"आब तों कानऽ जुनि लाग। देखा लेब। मुदा डाक्टर जे कहत से जनले अछि। .... बुढ़ियाक फूसि।"

चन्द्रमुखीकेँ सेहो हँसी लागि गेलनि। छहछह आँखिये हँसैत बजली - "भगवती करथु सैह बहराय।"

मुदा भगवती नहि कयलखिन। फूलक लघीमे रक्त बहराय लगलनि। डाक्टरक संदेह छलैक -कैंसर।

चन्द्रमुखी एहि डाक्टरसँ ओहि डाक्टर लग दौड़ऽ लगली। आमक बाड़ी सूद भरना पर दऽ पटना गेली। फेर जाँच। चन्द्रमुखीकेँ विश्वास छलनि जे डाक्टर कहत -पहिला बेरक जाँचमे गलती भऽ गेल रहैक। नीकेँ भऽ जयता। आपरेशनक आवश्यकता नहि।

मुदा डाक्टर से कहियो नहि कहलकनि। आपरेशनक बात कहलकनि -"ई हमरालोकनिक साध्यसँ बाहर अछि। अधिकसँ अधिक तीन मास खेपि जयता। एकमात्र भगवानक भरोस।"

ईश्वर सर्वशक्तिमान छथि । चन्द्रमुखी दाइकेँ मोन पड़लनि -जाहि समय विधवा भेल छली, घरक गोसाउनि लग कल जोड़ि प्रार्थना कयने छली - हमर जीवन निदग्ग राखब।

पहाड़ सन जीवन काटि गेली चन्द्रमुखी अछि जल जका। क्यो आङ्गुर तक नहि उठा सकल।

सब सराहि रहल छनि कोना? खाली भगवतीक कृपा। नहि तऽ ओ कोन जोगरक छली?

चन्द्रमुखी फूलकेँ गाम लऽ अनलथिन। कविराजी चिकित्सा करबऽ लगली। गोसाउनिक घरमे सम्पुट पाठ। फूलक सिरमा लग बैसि अपनहु 'रोगान शेषान्' केर जप करैत रहथि।

चन्द्रमुखी जप करैत छली, जखन फूलक प्राण छुटलनि। चन्द्रमुखी हतबुद्धि भेल देखऽ लगली। अपलक।

लोक सब अन्त्येष्टिक ओरिआनमे लागि गेल। क्यो आबि कऽ पुछलकनि-''घरमे नव धोती अछि ?''

चन्द्रमुखी आँचरसँ चाभी खोलि कऽ दऽ देलथिन। चुपहि मुहेँ। तिलांजलि देबऽ गेली। चुपहि मुहेँ। लोक सब सेहो स्तब्ध अदृष्टक क्रूर परिहास पर।

सहसा ककरो ध्यान पर चढ़लैक जे चन्द्रमुखी एकदम गुम्म भऽ गेल छली।

"तखनसँ एकहु आखर मुँहसँ नहि बहरायल छनि।"

"पल सेहो नहि खसलनि अछि।"

"कहुना हुनका कनयबाक चाही ।"

"एह, कनैत-कनैत नोर सुखा गेलनि बेचारीक।"

"मुदा एना गुम्म भऽ जायब नीक लक्षण नहि थिक।"

"की कहियनु, किछु फुरितहि ने अछि।"

"कोनो-ने-कोनो उपायसँ .....।"

"कोनो बच्चाकेँ सिखा दियौ ?"

सब चन्द्रमुखीकेँ सोर पाड़ऽ लगलनि-

"बाबी!"

"काकी।"

"भौजी।"

"बौआसिन।"

सब चन्द्रमुखीकेँ बजयबा पर तुलि गेल। देह झकझोरि कऽ सोर पाड़ऽ लगलनि।

"एना चुप किएक छी ?"

"होशमे आउ ।"

"भगवतीकेँ इएह मंजूर छलनि।"

"हे, गीताक श्लोक सुनू .....।"

"भगवद्भजनमे लागि जाउ।"

"की ? बजैत किएक नहि छी ?

"किछु तऽ बाजू।"

"बाजू।"

"बाजू ने !"

सब आरो जोरसँ झकझोरऽ लगलनि चन्द्रमुखीकेँ।

चन्द्रमुखी बजली - "हमरा भूख लागल अछि। घरमे जे भेटय, आनि दियऽ। हम खाऽ कऽ सूति रहब। आब कथी लेल उपास आ ककरा लेल जगरना।"

शब्दार्थ

हठात् - एकाएक

बिलटि - नष्ट भऽ जाय

अछिंजल - पूजा हेतु पवित्र जल

निदग्ग - दाग रहित

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नक सही विकल्प चयन करू :

(i) चन्द्रमुखी दाइक पुत्र अछि -

(क) रामू (ख) देबू

(ग) फूल (घ) गुलाब

(ii) माछ खयलासँ बढ़ैत अछि -

(क) बुद्धि (ख) लम्बाइ

(ग) सुन्दरता (घ) संस्कार

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू -

(i) फूल ओकालति पास कयलाक बाद मायकेँ प्रतिमास ..... टाका पठबऽ लगलनि।

(ii) फूल चन्द्रमुखीकेँ ..... शहर लऽ जाय चाहैत।

3. निम्नलिखित वाक्यकेँ आगू शुद्ध-अशुद्ध लिखू-

(i) चन्द्रमुखी दाइ दू कट्ठा जमीन किनलनि।

(ii) चन्द्रमुखी दाइ अपन खर्च बढ़ा लेलनि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) चन्द्रमुखी कथाक रचयिता के छथि ?

(ii) मरीचिका पर कोन पुरस्कार लेखिकाकेँ भेटलनि।

(iii) चन्द्रमुखीक बालकक नाम की छल ?

(iv) फूलकेँ कोन बीमारी भेलैक ?

(v) फूल केहन पुत्र छल ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) चन्द्रमुखी कथाक सारांश लिखू।

(ii) चन्द्रमुखी कथाक मूल विचार लिखू ।

(iii) अपन संतान लेल चन्द्रमुखी कोन-कोन कष्ट उठबैत रहलीह।

(iv) चन्द्रमुखी कथाक अहाँकेँ केहन लगैत अछि ?

(v) चन्द्रमुखीक चरित्र-चित्रण करू।

6. निम्नलिखित गद्य खण्डक सप्रसंग व्याख्या करू -

" ककरा छैक हमरा सन बेटा ? लाखमे एक अछि।
कतेक ममता छैक हमरा लेल। नहि, हम मधुबनी नहि रहब।
दू-चारि दिन पाहुन -पड़क जेकाँ रहब। बेटा पुतोहुकेँ
स्वच्छन्द छोड़ि देबैक। ओकरा सभक नव वयस।
इएह तँ वयस थिकैक खयबा-खेलयबाक। ओहिमे

बूढ़ लोकक मुड़ियारी देव महा अनर्थ।''

7. निम्नलिखित शब्दमे प्रत्यय -उपसर्ग फराक करू -

निराहार, संतान, ममत्व, अतिचार, व्याकरण, महानता, बुढ़ापा

गतिविधि-

(i) छात्र माय-बेटाक चित्र बनाय एक दोसरक स्नेहकेँ देखाबथि।

(ii) बालकक जीवन निर्माणमे मायक भूमिकाक उल्लेख करू।

(iii) शहरी ओ ग्रामीण माताक गति-विधिक लेखा-जोखा प्रस्तुत करू।

निर्देश -

(i) शिक्षक छात्र लोकनिक बीच एक आदर्श भारतीय मायक चित्रण करथि।

(ii) माय-बेटाक पवित्र सम्बन्ध पर छात्र लोकनिक विचारक संकलन करू।

(iii) शिक्षक छात्रलोकनिसँ किछु एहन गीत गबाबथि जाहिमे मायक त्यागक वर्णन हो।

राज मोहन झा

राज मोहन झाक जन्म 27 अगस्त 1934 मे वैशाली जिलाक बाजितपुर गाममे भेल छलनि। मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राज मोहन झाक योगदान उल्लेखनीय अछि। हिनका ई प्रतिभा पितामह जनार्दन झा 'जनसीदन' एवं पिता हरिमोहन झासँ प्राप्त भेल छनि। कौलिक संस्कारक प्रभाव हिनक रचना पर पड़ल अछि। मनोविज्ञानमे एम. ए. कयलाक बाद ई बिहार सरकारक श्रम एवं नियोजन विभागमे पदाधिकारी छलाह, जाहि पदसँ ओ 1994 मे सेवानिवृत भेलाह।

हिनक कथाक वस्तु एवं शैली अन्य कथाकारसँ भिन्न अछि। हिनक पहिल कथा 1957 मे 'पल्लव' पत्रिकामे छपल छनि। हिनक पहिल कथा संग्रह 'एक आदि : एक अन्त' 1965 मे, दोसर कथा संग्रह 'झूठ-साँच', 1972 मे तथा तेसर कथा संग्रह 'एकटा तेसर' 1984 मे छपलनि, हिनक निबन्ध संग्रह 'गलतीनामा', भनहि विद्यापति, टिप्पणीत्यादि आदि बेस चर्चित छनि। आइ काल्हि परसू (1993), अनुलग्न (1996), अभियुक्त विस्थापित निष्कासन इत्यादि -इत्यादि (2003) छपल छनि। 1982 सँ साहित्यिक पत्रिका 'आरम्भक' सम्पादन तथा प्रकाशन केलनि अछि।

हिनका 1986 मे 'वैदेही' पुरस्कार ओ 1996 मे 'आइ काल्हि परसू ' कथा संग्रह पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल छनि। 2009 क प्रबोध साहित्य सम्मानसँ ई सम्मानित भेल छथि।

हिनक कथा मध्यम वर्गक पारिवारिक जीवनक व्यथाकेँ अभिव्यक्ति दैत अछि। निबन्धक आ समीक्षक रूपमे सेहो ई प्रसिद्ध छथि मुदा हिनक कथाकार रूप मुकुट जकाँ शोभित अछि। भोजन कथामे समयक संग बदलैत परिस्थिति, विचार आ रुचिक वर्णन अछि। मनुष्यक नियति कतेक काल-प्रभावित अछि, तकरा ई कथा अत्यन्त मार्मिक ढंगसँ रखैत अछि।

भोजन

हम भितरका कोठरीमे कल्हुका क्लास लेल नोट तैयार करैत रही, आ ममता ड्राइंग रूममे कापी जाँचि रहल छलि। कने काल बाद ममताकेँ सुनलहुँ रमुआकेँ जोरसँ आदेश दैत- 'खाना भ' गेलौ रे, रमुआ ? भ' गेलौ तँ लगा।'

हमरा छल जे ई आखिरी नोट तैयार क' ली, तहन उठी। जोरसँ बजलहुँ -'हमरा कने ई नोट पूरा क' लेब' दिय'। कोन हड़बड़ी अछि, एखन (घड़ी उठा क' देखलहुँ) साढ़े आठे बाजल अछि।'

'तँ साढ़े आठ अहाँकेँ कम्म बुझाइए ? हमरा भोरे आठे बजे कालेज पहुँचि जयबाक अछि ।'

'हमरो कालिह नौए बजेसँ क्लास अछि।'-हम चिकरलहुँ।

'अहाँकेँ की अछि, अपन आठ बजे उठब। हमरा भोरे उठि सभ किछु करबाक रहैए। नोट पूरा क' लेब अपन खयलाक बाद।'

नहि मानतीह ई। हम किताबकेँ तकियापर उन्टा सुता बाहर अयलहुँ। ममता कापी जाँचिए रहल छलि। कहलिऐ -'वाह, हमरा तँ बन्द करबा देलहुँ, आ अपने पोथा पसारने छी।'

'यैह, जा रमुआ थारी अनैए!' कापीसँ मूड़ी उठौने बिनु ममता बाजलि।

'बेस, हम अहाँकेँ कय बेर कहने छी जे कमसँ कम नौ बाज' दियौ। केओ सभ्य लोक नौ बजेसँ पहिने नइ खाइत अछि।

'तँ नौ तँ बाजिए जायत खाइत-खाइत।' -ममता कापीमे नम्बर चढ़बैत बाजलि।

हम ओकरा आगाँसँ कापी झिकैत कहलिऐ-'नौ बजे माने खा क' उठी नहि , नौ बजे खाय बैसी।'

'अच्छा एक्के बात भेलैं' ममता सोझ होइत बाजलि- 'अहीं जकाँ आठ बजे धरि हमहूँ सूतल नहि रहै छी। हमरा भोरे उठि ...'

'अच्छा एकटा कहू?' -बात कटैत हम कने गंभीर भ' ममताकेँ पुछलिऐ-

'भोरे उठि अहाँकेँ की सभ करबाक रहैए, जखन कि सभटा काज तँ रमुआ करैत अछि ?'

'अहा हा! आ रमुआकेँ भोरे भोर के उठबैत छै ?' ममता चहकैत बाजलि-'एक दिन हम छोड़ि दिऐ तँ ई छौंड़ा तँ और नौ बजे उठत। आ, एक बेर उठौलासँ उठि जाइत ई छौंड़ा, तहन कोन बात छलै। एह, फेर जा क' सूति रहत। एकरा तँ दस बेर उठबियौ तहन जा क' तँ एकर आँखि फुजैत अछि! कय दिन तँ हमरा पानि ढार' पड़ल अछि छौंड़ा पर, तेहन ई अछि।'

हमरा कने अमानुषिक जकाँ लागल। कहलिऐ ममताके -'अहाँ बड़ निरदयी छी। ममता तँ बेकारे अहाँक नाम रखलक, जे केओ रखलक से। अच्छा, के रखलक अहाँक नाम सत्ते ?'

'आब छोड़ू, हमरा नइँ मन अछि के रखलक।' ममता अपन कापीक थाक उठबैत बाजलि। रमुआ पानिक जग आ दू टा गिलास आनि क' टेबुलपर राखि गेल। ई एहि बातक पूर्व सूचना छल जे आब ओ थारी आनत। खाय पड़त।

हम ममताकेँ कहलिऐ - 'अच्छा, अहाँकेँ एना नहि लगैत अछि जे, हमर मतलब अछि, भोजन जे हमसभ करै छी नित दिन, से नहि लगैत अछि जे एकटा यांत्रिक प्रक्रियाक अन्तर्गत क' लैत छी ? माने, अपन आन सभ काज जकाँ ? भोजन काज जकाँ नहि करबाक चाही।'

'वाह, भोजनो तँ एकटा काजे भेलै। काज तँ भेबे केलै ।'

'तेना नहि । हमर मतलब 'भोजन करब' क्रियासँ नहि छल। 'भर्ब' तँ भेबे कैलै। 'वर्क' नहि होयबाक चाही ई। एकरा 'टास्क' बुझि क' नहि कयल जयबाक चाही ।' - हम बुझौलिऐ।

'अच्छा ई सभ फिलॉसॉफी अपन राखू अपनहि लग। अहाँक हिसाबेँ जँ चल' लागी हम तँ भ' गेल! कोनो काजे नहि हो।'

रमुआ थारी राखि गेल। हम एकटा उड़ैत दृष्टि थारीक वृत्तमे दौड़ौलहुँ । बाटीकेँ अपना और लग घुसकबैत हम ममताकेँ पूछलिऐ-'अच्छा, कालिह्यो तँ भरिसक यैह आलू-परोड़ आ रामतरोइक भुजिया बनौने रहय! नहि ?'

ममता रोटीक टुकड़ा तोड़ि दालिमे डुबबैत बाजलि -'तँ और की बनाओत ? आइ-कालिह गनि-गुथि क' यैह तँ तीन-चारिटा तरकारी भेटै छै- भाँटा, करैल आ कि यैह परोड़ आ

रामतरोइ। परोड़ खाइत - खाइत मुदा हमरो मन भरि गेल अछि सत्ते।'

'खाली सैह नहि ने। हमरा तँ लगैत अछि, परोड़क बदला मानि लिय' जे करैले बनबय ई, तैयो हमरा नहि लगै अछि जे स्वादमे कोनो विशेष अन्तर पड़' वला अछि। असलमे बनयबाक एकर जे पद्धति कहू वा प्रक्रिया छैक, से एक्के छै। तँ चाहे परोड़ बनबओ वा करैल, स्वाद एके रंग होइ छै करीब-करीब। किछु हमसभ खाइतो तेना छी, जाहिमे स्वादक प्राय: बहुत स्थानो नहि रहै छै। .... नहि ?'

ममता पानिक घाँट ल' क' बाजलि - आब जे बनबैत अछि बेचारा, बना तँ लैत अछि। हमरा ओते समयो नहि रहैए जे किछु देखाइयो देबै।'

हम मन पार' लगलहुँ जे ममताक हाथक भोजन पछिला बेर हम कहिया कयने रही। नहि मन पड़ल। मन भेल जे ममतेसँ पुछि लिऐक। मुदा तुरंत डर भेल जे एहि बातक ओ आन अभिप्राय ल' लेत।

'आब की सोच' लगलहुँ अहाँ ?' ममता मुँहमे कौर लैत पुछलक।

'नहि, सोचब की ? सोचैत रही जे ई सभ टा निघँटयबाक अछि ।' - हम आगाँक थारी-बाटी दिस इंगित करैत कहलिएक।

'हे, खा लिय' जल्दी । ओकरो छुट्टी हेतइ !' -हमरा देरीसँ चिबबैत देखि ममता टोकलक।

रमुआ दूधक कटोरा ल' क' आयल तँ ममता ओकरा पापड़ सेदि क' आन' कहलकै।

'अच्छा, एना नहि भ' सकैत अछि कहियो जे ..... हम कहैत रही एक दिन जँ एना करी .....'

'कोना करी ?' -ममता टोकि क' हमरा दिस ताक' लागलि।

'असलमे हमर एकटा बहुत दिनसँ इच्छा अछि। इच्छा ई अछि जे एक दिन अहाँ हमरापर जबर्दस्ती नहि करी खाय लेल। हमर जखन मन होयत, माने हमरा जखन खूब भूख लागल, रातिमे एक वा दू बजे, अथवा जखन, तखन खाइत जाइ!' हम प्रस्ताव रखलहुँ।

'हँ आ रमुआ बैसल रहत ता धरि ?' - ममता आँखिमे प्रश्न ल' क' तकलक।

'मानि लिय' ओ अपन खा क' सूति रहत।' हम आँखिमे प्रश्न ल' क' तकलिऐक।

'नहि, हम नहि जागल रहब ता धरि। हमहूँ खा क' सूति रहब। अहाँ लेल परसि क'

राखि देत, अहाँ अपन उठि क' खा लेब जखन मन हो।' - ममता सोझे कन्नी काटि लेलक।

एसगरे खयबाक विकल्प हमर उत्साह ठंढा क' देलक। रमुआ पापड़ सेदि क' ल' अनलक आ हमरसभक गप्प सुन' ठाढ़ भ' गेल। ममता ओकरा कहलकै - 'जो तोहूँ अपन परसि क' ल' ले। खा क' सूत जल्दी, भोरे उठबाक छौ।

हम पापड़ तोड़ि दाँत तर देलहुँ। कुड़कुड़बैत -कुड़कुड़बैत पता नहि हम कोना बहुत दिन पहिलुका देखल गामपरक एकटा दृश्यक आगाँ आबि क' ठाढ़' भ' गेलहुँ। बाबा भोजन पर बैसल छथि, आ मैंयाँ आगाँमे पंखा ल' क' बैसलि छनि। कतेक रास गप्प आ सूचनाक आदान-प्रदान दुनू गोटेकेँ एही मध्य होइन। बाबा बहुत रुचिपूर्वक भोजन करथि। धात्रीक चटनी हुनका दुनू साँझ अनिवार्य छलनि। बाबाकेँ खायल भ' जानि तँ मैंयाँ भूमिपर हाथ रोपैत उठि क' ठाढ़ होथि - 'थम्हू , दही नेने अबैत छी।' हमर बाल-मानस पर ई छवि लगैए बहुत गहीरेँ जा क' अंकित भ' गेल अछि । तेँ हमरा आइयो ओहिना मन अछि। एकटा कारण ईहो भ' सकैत अछि जे बाबाक भोजन करबाक ई दृश्य भोजनक प्रति एकटा आकर्षक स्वाद उत्पन्न करैत अछि। ओहि जमानामे लोक होइतो छल भोजनक प्रेमी। मैंयाँ सभ दिन साँझमे बाबासँ पुछनि- 'आइ की तरकारी बनतै रातिमे ?' आ बाबा कहथिन। खाली तरकारिक नामे नहि, कोना बनतै सेहो कहथिन। जेना, भाटेँ साग द' क' , अथवा सजमनि मुरइ द' क'। .....

हमरा मन भेल जे ई बात ममताकेँ कहिऐक। मुदा हमरा लागल जे एकरा ओ सही परिप्रेक्ष्य मे नहि ल' स्त्री जाति पर पुरुषक आधिपत्य-माने एकरा नारी स्वातंत्र्यक प्रश्नसँ जोड़ि क' देखत। तेँ बात बदलि क' पुछलिऐ - 'अच्छा, अहाँक अपन दादा मन छथि?'

ममता दूधक कटोरा उठा 'सिप' कर' लागल छलि। ओ कने काल हमर आँखि तकैत रहलि, जेना एहि प्रश्नक तात्पर्य बुझबाक प्रयास क' रहल हो। बाजलि - 'हँ, मन छथि। मुदा एखन हमर दादा अहाँकेँ कत' सँ मन पड़ि गेलाह। अहाँ तँ हुनका नहि देखलियनि। अच्छा, मैंयाँ मन छथि ?'

'किए नहि मन रहतीह ? मुदा अहाँ ई सभ फालतू बात की सोच' लगैत छी थारी आगाँमे राखि क' ?'

हम अप्रतिभ भ' गेलहुँ। नीक नहि लागल ममताक 'फालतू' शब्दक प्रयोग । हम पानि पीबि दूधक कटोरा थारीमे आगाँ रखलहुँ।

ममतासँ किछु कहब व्यर्थ छल। ओ अपन दूधक कटोरा शेष क' लेने छलि आ हमर

प्रतीक्षामे बैसल छलि। हम ओकरा उठ' कहलिऐक, मुदा ओ बैसल रहलि। बाजलि जे तखन तँ अहाँ और देरी करब।

कने काल बाद ओ फेर नेहोरा कयलक - 'हे, छुट्टी दियौ ओहू छौंड़ाकेँ। जते जल्दी खयबै, ओकरहु काज होयतै।'

हम बाबाक जमानासँ आगाँ बढ़ि बाबूजीक युगमे आबि गेल रही। बाबा जकाँ ओ सभ दिन कोन तरकारी बनतै, से फरमान तँ नहि जारी करैत रहथिन, मुदा मायसँ पुछथिन जरूर जे आइ की तरकारी बनल अछि ? की तरकारी बनौलीह, से माय अपने निर्णय लेथि। ई भार बाबू जी माय पर छोड़ि देने रहथिन प्राय:। अथवा माय अपनहि ई अधिकार स्वत: ल' लेने रहथि। एक युगमे एतेक प्रगति तँ होबहिक चाही। हम सोचलहुँ, निर्णय जकर ककरो रहैत होइक आ अधिकार चाहे जकर होइक, ई बात छलै जे भोजन एकटा रुचिकर आ आकर्षक वस्तु होइत छलै ताहि दिन। हमरा हँसबाक मन भेल जे आब हमरा सभक युगमे आबि क' ई निर्णयक अधिकार पति आ पत्नीक हाथसँ निकलि नौकरक हाथमे आबि गेल अछि।

हमर ध्यान ममता दिस गेल जे हमर प्रतीक्षामे बैसल छलि। हमरा लागल जे एतीकालसँ हमरापर नजरि गड़ौने ममता हमर मनमे आयल सभटा भाव जेना पढ़बाक प्रयास करैत रहलि अछि। हम कटोरा उठा एके साँसमे बचल सभटा दूध पीबि गेलहुँ।

शब्दार्थ

चहकैत	-	प्रसन्न होइत
अमानुषिक	-	अमानवीय
वृत्त	-	घेरा
धात्री	-	आँवला
परिप्रेक्ष्य	-	परिवेश
आधिपत्य	-	अधिकार

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

निम्नलिखित खाली स्थानक पूर्त्ति करू -

(क) हम कटोरा उठा एके साँसमे बचल सभटा ..... पीबि गेलहुँ।

(ख) हम ..... तोड़ि दाँत तर देलहुँ।

2. निम्नलिखित वाक्यक समक्ष शुद्ध-अशुद्ध लिखू -

(क) रमुआ मालिक छल।

(ख) कथानायकक पत्नी ममता छलीह।

3. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्प अपन उत्तर पुस्तिकामे लिखू-

(i) ममता की करैत छलीह ?

(क) नोट तैयार करैत छलीह (ख) कॉपी जाँचि रहल छलीह।

(ग) पुस्तक पढ़ि रहल छलीह (घ) चिट्ठी लिखैत छलीह।

(ii) ममता रमुआकेँ की आनय कहलैक ?

(क) केरा (ख) भात (ग) दही (घ) पापड़

4. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) लेखक क्लास लेल की तैयार करैत छलाह ?

(ii) ममता ड्राइंग रूममे की क', रहल छलि ?

(iii) ममता कॉपी पर की चढ़बैत छलि?

(iv) भोजन आइ कोन क्रियाक अन्तर्गत अबैत अछि ?

(v) कथामे ममता छौंड़ा ककरा कहने अछि ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) भोजन कथाक सारांश लिखू।

(ii) भोजन कथाक उद्देश्य स्पष्ट करू।

(iii) प्राचीन आ आधुनिक भोजनक प्रसंग लेखकक विचार स्पष्ट करू।

(iv) ममताक चरित्र चित्रण करू।

6. निम्नलिखिते गद्य खण्डक सप्रसंग व्याख्या करू :

(क) अच्छा, अहाँकेँ एना नहि लगैत अछि जे, हमर मतलब अछि, भोजन जे

हमसभ करैत छी नित दिन, से नहि लगैत अछि जे एकटा यांत्रिक प्रक्रियाक अन्तर्गत क' लैत छी, माने, अपन आन सभ काज जकाँ ? भोजन काज जकाँ नहि करबाक चाही।

(ख) तेना नहि। हमर मतलब' भोजन करब' क्रियासँ नहि छल। भर्ब तँ भेवै कैले। 'वर्क' नहि होयबाक चाही ई ।

दीनेश्वर लाल 'आनन्द'

दीनेश्वर लाल 'आनन्द' क जन्म सहरसा जिलाक महिला गाममे भेल छलनि, सितम्बर 1936 ई. मे । हिनक जन्म भेलनि आ एकहन्तरि वर्षक आयुमे मार्च, 2007 ई. मे ई देह त्याग कयलनि।

हिनक सम्पूर्ण जीवन संघर्षमय रहल। बी.ए. , एम. ए. ई स्वतंत्र छात्रक रूपमे कयलनि। तकरा बाद पि.एच. डी. भेलाह। हिनक कर्मठता एवं लगनशीलताक परिणाम छल जे ई बिहार सरकारक संयुक्त सचिवक पदसँ सेवा-निवृत भेलाह। जन-शिक्षा साधन केन्द्र 'दीपायतन' क निदेशक सेहो छलाह।

दीनेश्वर लाल 'आनन्द' मुख्यतः हिन्दीमे लिखलनि। 'बालक' आ 'चुन्नू-मुन्नू' क यशस्वी सम्पादकक रूपमे हिनक ख्याति भेलनि। बाल-साहित्यक लगभग दू दर्जन पोथीक ई रचयिता छथि। एकर अतिरिक्त विद्यापति विषयक ग्रन्थक सम्पादन आ लेखनमे सेहो हिनक रुचि छलनि। विद्यापति-पदावलीक व्याख्यातारूपमे हिनक उल्लेखनीय योगदान अछि।

डॉ. आनन्द पर्यावरण विशेषज्ञक रूपमे सेहो जानल जाइत छथि। 'वन' नामक हिनक पद्य-रचना बालोपयोगी साहित्यमे बेस चर्चित अछि। प्रस्तुत निबन्धमे पर्यावरणक स्थिति आ समस्या तथा ओकर सुधारक उपाय एवं आवश्यकताक प्रसंग हिनक कथ्य विचारणीय अछि।

पर्यावरण

मनुष्य हो वा पशु, गाछ-वृक्ष हो वा घास-पात- सभमे जीवन होइत छैक, जीवनी शक्ति होइत छैक। एहि जीवनी-शक्तिक सुरक्षाक हेतु एक प्रकारक वातावरणक आवश्यकता होइत छैक । ओकरे पर्यावरण कहल जाइत छैक।

पर्यावरणक महत्त्व अनादि कालसँ अछि। वेदमे कामना कयल गेल अछि -मधुवाता ऋतायते ..... मधुब्रन्ति सिन्धवः ..... वनस्पतिर्मधुवान .....। बसात, पानि तथा वनस्पति-प्रकृतिक ई तीनू वस्तु प्रत्येक जीव लेल जरूरी अछि। ई तीनू पर्यावरणक अंग थिक। तीनूक स्वच्छता प्रत्येक प्राणीक अस्तित्व-रक्षाक अनिवार्य आधार थिक।

प्रत्येक जीव-जन्तु लेल सभसँ आवश्यक वस्तु अछि वायु। वायु बिना केओ जीवित नहि रहि सकैत अछि। तँ वायुक स्वच्छता पर ध्यान देब परमावश्यक। हमर पुरखालोकनि एहि बात पर विशेष ध्यान दैत छलाह। वातावरणकेँ स्वच्छ रखबाक हेतु घर-घरमे होम करबाक परिपाटी छल। होममे ओहने वस्तु सभ जराओल जाइत छलैक जाहिसँ वातावरण शुद्ध होइत छल। किन्तु, पहिने लोकक संख्या कम छल। कल-कारखाना आ स्कूटर-कारसँ वायुमंडल प्रदूषित नहि होइत छल। आजुक युगमे वायुमंडलकेँ प्रदूषणमुक्त राखब जतबे आवश्यक अछि ततबे कठिन।

हमसभ जनैत छी जे बसातमे अनेक प्रकारक गैस मिलल अछि। एहिमे प्रमुख अछि आक्सीजन, कार्बनडायआक्साइड तथा नाइट्रोजन । आक्सीजन मनुष्यक हेतु आवश्यक अछि आ कार्बनडायआक्साइड गाछ-वृक्ष लेल। मनुष्य साँस द्वारा वायु अपना भीतर लऽ जाइत अछि। फेफड़ामे जा कऽ वायु देहक लिधुरकेँ साफ करैत अछि। ओकरा विकारमुक्त करैत अछि। विकृत वायु प्रश्वास द्वारा बाहर निकलि जाइत अछि। मुदा, सभ नहि निकैल पबैत अछि। कोनो रूपमे जे रहि जाइत अछि से हमर शरीरतंत्रकेँ प्रभावित करैत अछि आ हम विभिन्न प्रकारक रोगसँ ग्रस्त भऽ जाइत छी। प्रदूषित वायुमे साँस लेलासँ दम फुलऽ लगैत अछि। धूआँ, धूरामे मिश्रित कण, सड़ल-गलल वस्तुक गन्ध आदि हवा -बसातकेँ दूषित करैत अछि। जतऽ-ततऽ मल-मूत्र त्याग करब वायुक प्रदूषणक मुख्य कारण थिक। तेँ एहि सभ बात पर ध्यान देब

आवश्यक अछि। पैखाना, मोड़ी आ पानिसँ भरल छोट-मोट खाधि सभकेँ झाँपि कऽ रखलासँ वायु प्रदूषित होयबासँ बचैत अछि। घरमे पैघ-पैघ खिड़की लगायब, सुतैत काल खिड़की सभकेँ खुजल राखब तथा भोरक स्वच्छ वायुमे टहलब स्वास्थ्यक हेतु लाभकारी अछि। पेट्रोल-डीजलसँ चलऽवला वाहनकेँ नियमानुसार धूआँसँ मुक्त राखब नितान्त आवश्यक अछि।

वायुक बाद दोसर सभसँ महत्त्वपूर्ण वस्तु थिक जल। जलकेँ जीवन सेहो कहल जाइत अछि। प्रत्येक जीव-जन्तु आ गाछ -वृक्षकेँ जलक आवश्यकता अछि। पहिने नदीक जल शुद्ध रहैत छल, तेँ नदीमे स्नान करब पवित्र काज मानल जाइत छल। मुदा आब से बात नहि अछि। अनेक-प्रकारक गंदगी नदीक पानिमे मिलैत अछि आ ओकरा दूषित कऽ दैत अछि। कल-कारखानक गदौस बहि कऽ नदीमे खसैत अछि आ नदीक पानिकेँ ओ विषाक्त कऽ दैत अछि। गंगा सन पवित्र ओ विशाल नदीक पानि सेहो प्रदूषित भऽ गेल अछि।

कहबी छैक जे पानि पीबी छानि कऽ आ बात बाजी जानि कऽ। कहबाक तात्पर्य ई जे अशुद्ध जलक उपयोग हानिकारक थिक। जलक महत्त्वकेँ ध्यानमे राखि कऽ हमर सभक पुरखालोकनि पोखरि आ इनार खुनबैत छलाह। पोखरि-इनार खुनायब प्रतिष्ठाक कार्य बुझल जाइत छल। मिथिलामे कतेक राजा तेहन-तेहन पोखरि खुनौने छथि, जाहि कारणेँ हुनकालोकनिक नाम आइ धरि लोक लैत अछि। रजोखरि पोखरि नामी अछि। मिथिलांचल नदीमातृक प्रदेश थिक। तेँ एहिठाम जलाशयक प्रचुरता अछि। एकर उपयोग गामक लोक करैत अछि। किन्तु, आइ-काल्हि गामो घरमे पोखरि-इनारक पानिकेँ उपयोगमे आनब लोक छोड़ने जा रहल अछि। तकर मुख्य कारण एहि सभ जलाशयक दूषित होयब थिक। आब कलक पानि बेसी शुद्ध बूझल जाइत अछि। मुदा, कलक जलकेँ सेहो विभिन्न प्रकारेँ स्वच्छ बना कऽ पीबाक आवश्यकता होइत अछि। तात्पर्य ई जे वायु जकाँ जल सेहो जीव मात्रक लेल आवश्यक अछि आ तेँ जलाशय आ जलागारक स्वच्छता पर ध्यान देब पर्यावरणक निर्मलता हेतु अनिवार्य थिक।

पर्यावरणकेँ स्वच्छ रखबाक लेल सर्वाधिक उपयोगी अछि गाछ-वृक्ष । पहिने लोक गाछ-वृक्ष आ वनक महत्त्व खूब जनैत छल । तेँ घर तथा गामक समीप खूब गाछ लगबैत छल। एक व्यक्तिक लेल दस गाछ लगायब जरूरी बूझल जाइत छल। एक वृक्ष लगा देलासँ दस पुत्र होयबाक, पुण्य होइत छलैक आ एक व्यक्ति लेल दस गाछ लगायब आवश्यक छलैक। एहि प्रकारेँ वृक्षारोपणकेँ धार्मिक भावनाक संग जोड़ि देल गेल छल।

हम सब जनैत छी जे मनुष्य आक्सीजन लैत अछि आ कार्बनडायआक्साइड छोड़ैत अछि। गाछ-वृक्ष कार्बनडायआक्साइड लैत अछि। आ आक्सीजन छोड़ैत अछि । एहि प्रकारेँ मनुष्य अथवा प्रत्येक जीव-जन्तुकेँ गाछ-वृक्षसँ अन्योनाश्रित सम्बन्ध छैक । यदि, वायुमण्डलमे ऑक्सीजन नहि रहतैक तँ मनुष्यो नहि रहत। आक्सीजनक उपस्थिति गाछ-वृक्षक अस्तित्व पर निर्भर करैत अछि। दुखक बात अछि जे एतेक महत्त्वपूर्ण वस्तुकेँ लोक समाप्त कयने जा रहल अछि।

गाछ-वृक्षक महत्त्व मनुष्यक जीवनमे डेग-डेग पर अछि। चकला-बेलनासँ लऽ कऽ लाठी-भाला धरिमे लकड़ीक उपयोग होइत अछि। केबाड़-खिड़की, चौकी-सन्दूक, खुरपी-हांसू, कोदारि-हर-पालो आदिमे तँ लकड़ीक उपयोग होइते अछि। संगहि संग जारनिक कामे सेहो लकड़ीक उपयोग होइत अछि। जरलाक बादो लकड़ी कोइलाक रूपमे काज अबैत अछि। सिम्मरक लकड़ीसँ दियासलाइक काठी बनैत अछि, तँ देवदारूक लकड़ीसँ पेंन्सिल। जंगल एहि सब उपयोगी वस्तुकेँ उपलब्ध करयबाक, अतिरिक्त सबसँ पैघ काज करैत अछि पर्यावरणकेँ स्वच्छ रखबामे।

गाछ-वृक्ष आ वंनकेँ धार्मिक भावनाक संगहि सांस्कृतिक चेतनाक संग सेहो जोड़ि देल गेल अछि। हजारो साल पहिने लोक जंगलेमे रहैत छल। लोकक संख्या बढ़ैत गेलैक आ लोकक ज्ञानमे वृद्धि होइत गेलैक। लोक गाछ-वृक्षकेँ काटि-काटि गृह निर्माणक काज करऽ लागल। तकरा बाद चासमे सेहो ओकर उपयोग करऽ लागल। जंगलक किछु भाग एहि तरहेँ चास-वासमे परिणत भऽ गेल। जंगली लोक जखन किसान बनल तखन देखलक जे जंगलक प्रभावे वर्षा होइत अछि आ ओहिसँ उपजामे वृद्धि होइत अछि। गाछकेँ ओ सब देवता जकाँ पूजा करऽ लागल। एखनहुँ गाछ-वृक्षक पूजा करब सामान्य बात थिक। एतबे नहि, एहि तरहेँ गाछ-वृक्ष हमर धार्मिक आ सांस्कृतिक जीवनक अंग बनि गेल। ओकर महत्त्वकेँ एहि रूपेँ जीवन चर्याक संग एकात्म कऽ देल गेल जे वृक्षारोपण सहजे होइत रहय।

आजुक लोकक धार्मिक भावनाँ अथवा सांस्कृतिक चेतनामे अवमूल्यन भऽ रहल अछि। तेँ गाछ-वृक्षक महत्त्वकेँ फराकसँ बुझबाक आवश्यकता भऽ गेल अछि। वन-महोत्सव एही अतिरिक्त प्रयासक देन थिक।

एतेक धरि निश्चित जे पर्यावरणकेँ विशुद्ध रखबाक लेल वायु आ जले निर्मलता यदि

आवश्यक अछि तँ ताहि लेल सर्वाधिक आवश्यक कार्य अछि वृक्षारोपण। एहिसँ पर्यावरणकेँ स्वच्छ रखबामे सहायता पहुँचैत अछि आ आजुक औद्योगिक विकासक युगमे सेहो मनुष्यक जीवन-यापन सहज-सरल भऽ सकैत अछि। हमर सभक कर्त्तव्य थिक जे पर्यावरणक सुरक्षापर ध्यान दी आ एहि दिशामे होइत प्रयासमे सहायक बनी।

शब्दार्थ

पर्यावरण - परिवेश, परिमंडल

गदौस - गन्दगी

अवमूल्यन - गिरावट , मूल्यमे कम करब

पुरखा - पूर्वज

प्रश्न ओ अभ्यास

1. निम्नलिखितमे सही विकल्प चयन करू -

(i) कोन चीज बिना लोक एक-दू घंटो भरि जीवित नहि रहि सकैत अछि ?

(क) पानि (ख) आगि

(ग) हवा (घ) अन्न

(i) पर्यावरणकेँ स्वच्छ रखबाक लेल सर्वाधिक उपयोगी अछि -

(क) पानि (ख) अन्न

(ग) मनुक्ख (घ) गाछ-वृक्ष

2. रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू -

(i) मल-मूत्र यत्र-तत्र त्याग करब वायुक ..... मुख्य कारण थिक?

(ii) गाछ-वृक्ष हमर धार्मिक आ ..... जीवनक अंग बनि गेल।

3. निम्नलिखित वाक्यमे शुद्ध-अशुद्ध चयन करू-

(i) गाछ-वृक्षक लेल हाइड्रोजन गैस आवश्यक अछि।

(ii) वातावरणकेँ स्वच्छ रखबाक हेतु घर-घरमे होम करबाक परिपाटी छल।

4. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) वायुक बाद दोसर सभसँ महत्त्वपूर्ण वस्तु की थिक ?

(ii) मनुष्यक हेतु कोन गैस आवश्यक अछि ?

(iii) हमरा लोकनि कोन गैस छोड़ैत छी ?

(iv) पर्यावरणक तीन मुख्य अंग कोन-कोन अछि ?

(v) पर्यावरण ककरा कहल जाइछ ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) पर्यावरण पर एक निबन्ध लिखू।

(ii) वनक उपयोगिता पर अपन विचार प्रस्तुत करू।

(iii) पहिने वृक्षारोपणक कोन उद्देश्य छलैक ?

(iv) नदी ओ पोखरिक महत्त्वक वर्णन करू।

(v) आइ धार्मिक आ सांस्कृतिक चेतनाक अवमूल्यनसँ कोन समस्या उत्पन्न भऽ रहल अछि ?

6. जल, वृक्ष, वन, घर, नदी शब्दक तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखू।

गतिविधि -

(i) पर्यावरणक रक्षाक विभिन्न उपादानक नाम लिखू।

(ii) वर्षा नहि होयबाक कारणक पता लगाउ।

(iii) पानि पीबी छानि कऽ आ बात बाजी जानि कऽ लोकोक्तिक पर अपन विचार प्रकट करू।

(iv) प्रदूषित पर्यावरणक दृश्यक एक चित्र बनाउ।

(v) जनसंख्या वृद्धि पर्यावरणकेँ कोनतरहेँ प्रदूषित कऽ रहल अछि ?

निर्देश -

(i) शिक्षक वर्गमे पर्यावरण पर भाषण प्रतियोगिताक आयोजन करथि।

(ii) शिक्षक वर्गक कोनो छात्रसँ पर्यावरण संबंधी वेदवचनक पाठ कराबथि।

(iii) मिथिलांचलक प्रमुख पोखरि सभक एक सूची शिक्षक वर्गक विद्यार्थी लोकनिसँ बनाबथि।

(iv) शिक्षक छात्र-छात्रा लोकनिसँ मरुभूमिक चित्र बनबाए ओतय वृक्षारोपण कयऽ वर्षाक एक सुन्दर दृश्यक निर्माण कराबथि।

भाग्यनारायण झा

भाग्यनारायण झा क जन्म दरभंगा जिलाक कारज गाममे भेल छलनि। हुनक जन्मतिथि 12 जनवरी 1941 ई0 अछि। ओ राजनीति शास्त्रमे एम. ए. ओ बी. एल. उत्तीर्ण छथि। पत्रकारिताकेँ ओ अपन जीवन-यापनक आधार बनौलनि। ओ दैनिक 'आर्यावर्त एवं हिन्दुस्तान' क अलावा 'दिनमान' सँ जुड़ल पत्रकार छलाह। आइ काल्हि ओ 'दैनिक जागरण' मे समीक्षक छथि।

हुनक सामाजिक नाटक 'मनोरथ' (1965 ई0), एकांकी संग्रह 'सोनक ममता' (1970 ई0) ओ यात्र वृत्तांत 'परदेश' (2008 ई0) प्रकाशित छनि। 'वैदेही' (दरभंगा) ओ 'मिथिला दर्शन' (कोलकाता) मे बहुत रास मैथिली आलेख सभ प्रकाशित अछि।

पटनाक सामाजिक ओ सांस्कृतिक संस्था 'चेतना समिति' सँ सम्बद्ध भऽ मैथिलीक प्रति समर्पित छथि। झाजी जर्मनी, फ्रांस, केनिया, मारीशस आदि देशसभक यात्रा कयने छथि।

'भारतीय संविधान निर्माता डा0 बी0 आ0 अम्बेदकर' मे हुनक जीवनवृत्त संक्षेपमे देल गेल अछि। अस्पृश्य जातिमे जन्म लेने हुनका ज्ञानार्जनक लेल अनेक तरहक संघर्ष करय पड़लनि। मुदा ओ देश-विदेशमे उच्चतम शिक्षा प्राप्त कयलनि। ओ अस्पृश्य समुदाय लेल 'हरिजन' शब्द के प्रति विरोध कयलनि एवं जातिप्रथाक कटु आलोचना कयलनि। अंतमे ओ बौद्धधर्म स्वीकार कऽ लेलनि । 1952 मे राज्यसभाक सदस्य मनोनीत भेलाह आ मृत्यु पर्यन्त ओहि पद पर रहलाह। आजादीक बाद ओ कांग्रेसनीत सरकारमे कानून मंत्री बनलाह। भारतीय संविधान लिखबाक भार भेटलनि। डा0 अम्बेदकरक व्यक्तित्व बहु आयामी छल।

भारतीय संविधान निर्माता डॉ० बी० आर० अंबेदकर

भारतीय संविधानक मुख्य निर्माता आ बाबा साहेबक नामसँ विख्यात डॉ. भीमराव रामजी अंबेदकरक जन्म 14 अप्रैल 1891 कँ तत्कालीन सेंट्रल प्रांत (आब मध्य प्रदेश) मे ब्रिटिश सरकार द्वारा स्थापित शहर आ सैनिक छावनी मोहवामे हिन्दू महार जाति परिवारमे भेल छलनि। महार जाति अस्पृश्य बूझल जाइत रहैक। डा. अंबेदकर अपन पिता रामजी मालोजी आ माता भीमा बाई मुबादकरक चौदहम एवं अंतिम संतान रहथि। ओना तँ हुनक परिवारक पृष्ठभूमि आधुनिक महाराष्ट्रक रत्नागिरी जिलामे अंबेदकर शहर रहनि। अंबेदकर वंशज दीर्घ अवधि धरि ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनीक सेनामे कार्यरत रहथि। प्रतिभासंपन्न डा. भीमराव अंबेदकरक पिता भारतीय सेनाक मोहवामे सुबेदारक पद धरि कार्यरत रहलाह। डा. अंबेदकरक पिता रामजी सकपाल अपन धीयापूताकँ हिन्दू विषय पढ़बाक लेल प्रोत्साहित कयलनि। सकपाल साहेब धीयापूताकँ सरकारी स्कूलमे पढ़ेबाक प्रयासमे सफलता प्राप्त कयलनि, किएक तँ ओहि समयमे जातिक विरोध सेहो होइत रहैक। रामजी सकपाल जखन 1894 मे अवकाशग्रहण कयलनि तँ हुनक परिवार सतारा चल गेलनि। संयोग एहन जे भीमरावक माताक देहांत भऽ गेलनि। मात्र तीन पुत्र बलराम, आनन्द राव आ भीमराव एवं दू पुत्री - मंजुला आ तुलासामे सँ मात्र भीमराव परीक्षा सभमे सफलता प्राप्त कयलनि। आगू पढ़लनि। हुनक गामक नाम रहनि अंबेद। 'अंबेद' रत्नागिरी जिलामे रहैक। तँ हुनक (भीमराव) पिता सकपाल अपन गामक नाम पर एकटा ब्राह्मण शिक्षकक सलाह पर 'अंबेदकर' रखलनि।

जीवनमे उतार-चढ़ाव प्रकृतिक नियम छैक। ई बात अंबेदकरक संग सेहो घटित होइत अछि। हुनक पिता रामजी सकपाल 1898 मे पुन: विवाह कयलनि। हुनक परिवार तखन बम्बई (आब मुंबई) मे रहय लागल। भीमराव बम्बईक एलीफिंस्टन रोडक समीप सरकारी उच्च विद्यालयमे पहिल अस्पृश्य विद्यार्थी रहथि। 1907 मे भीमराव अपन अद्भुत प्रतिभाक परिचय देलनि आ ओ बम्बई विश्वविद्यालयसँ मैट्रिक परीक्षोत्तीर्ण भेलाह। ओ पहिल अस्पृश्य युवक रहथि जे भारतक कालेजमे दाखिल भेलाह। ओही समयमे हुनक विवाह दपोलीक नौवर्षीय बालिका रामाबाई संग हिन्दू रीति-रिवाजसँ भऽ गेलनि।

हुनक संघर्षमय जीवनमे नव उत्साहक माहौल बनलनि। 1908 मे भीमराव एलफिंस्टन कालेजमे नाम लिखौलनि आ हुनका बड़ौदाक गायकवाड शासकसँ पच्चीस टाकाक छात्रवृत्ति

प्रतिमाह भेटय लगलनि। एतबे नहि, बड़ौदाक गायकवाड शासक, सहयाजी राव तृतीय हुनका संयुक्त राष्ट्र अमेरिकामे उच्च शिक्षामे अध्ययन करबाक लेल छात्रवृत्तिक व्यवस्था सेहो कऽ देलखिन। कहलो जाइत छैक जे ''जखन नीक दिन अबैत छैक तँ माटि छुलासँ सोन भऽ जाइत छैक आ अधालाह दिनमे सोन छुलो सँ माटि।'' ई प्रकृतिक यथार्थताक बोध करबैत अछि।

प्रतिभावान अंबेदकर 1912 मे अर्थशास्त्र आ राजनीतिमे डिग्री हासिल कयलनि। तदुपरांत, बड़ौदा स्टेटमे नौकरी करबाक ओ तैयारी करथि कि ओही वर्षमे हुनक पत्नी यशवंत नामक पुत्रकेँ जन्म देलनि। प्रकृतिक विधान पर ककरो अंकुश नहि। अंबेदकर अपन परिवारकेँ व्यवस्थित कर' चाहैत रहथि आ कि हुनक बीमार पिताक देहावसान 2 फरवरी 1912 केँ भऽ गेलनि। किछु मासक उपरांत, भीमरावक जीवनमे फेर नव अध्याय शुरू भऽ गेलनि । हुनका गायकवाड शासक प्रतिमाह साढ़े एगारह डालरक छात्रवृत्ति अमेरिकाक कोलंबिया विश्वविद्यालयमे पढ़बाक लेल मंजूरी देलनि। न्यूयार्क सिटी (अमेरिका) मे पहुंचला पर ओ राजनीति विज्ञान विभागमे स्नातक अध्ययन कार्यक्रममे दाखिला लेलनि। किछु दिन धरि 'डारमेटरी' मे रहलनि। 'डारमेटरी' भारतीय विद्यार्थी सभ मिलि-जुलिक' चलबैत रहथि। एकर बाद ओ पारसी मित्र नवल भथेनाक संग फराक घरमे रहय लगलाह। हुनका 1916 मे पीएच. डीक उपाधि भेटलनि। 'डाक्टेरेट' डिग्री प्राप्त भेलाक उपरांत, भीमराव लंदन चलि गेलाह आ ओ लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्समे लॉ (कानून) पढ़य लगलाह आ अर्थशास्त्र विषयमे डाक्टेरेट हेतु तैयारी करय लगलाह। संयोग एहन जे हुनक छात्रवृत्ति भेटक अवधि समाप्त भऽ रहल छलनि आ ओ अध्ययन बीचमे छोड़ि, प्रथम विश्व युद्ध 1914 क समयमे भारत वापस भऽ गेलाह।

लंदनसँ वापस भेला पर ओ बड़ौदा स्टेटमे सैनिक सचिवक पद पर कार्य करऽ लगलाह। हुनका ओहि पद पर मोन नहि लगलनि। ट्यूशन करय लगलाह। लेखाक कार्य शुरू कयल। एतबे नहि, व्यावसायिक परामर्शक कार्य प्रारंभ कयलनि, किन्तु ओहूमे ओ असफल रहलाह। जीवनक एहि उत्थान-पतनमे, बम्बईक पूर्व गवर्नर लार्ड सिडेहमक मदतिसँ ओ मुंबईक सिडेहम कालेज ऑफ कामर्स एण्ड इकोनोमिक्समे राजनीतिक शास्त्रक प्रोफेसरक पद प्राप्त करयमे कामयाब भेलाह। 1920 मे कोल्हापुर महाराजा आ अपन बचतसँ ओ पुनः इंग्लैंड गेलाह। 1923 मे भीमराव 'टाकाक समस्या' (द प्रोबलेम आफ द रूपी) शोध-निबंध पर लंदन विश्वविद्यालयसँ डी-एस सीक उपाधि प्राप्त कयलाह। लॉ (कानून) पढ़ाई पूरा कयला पर ओ ब्रिटेन (लंदन) मे बैरिस्टरक रूपमे भर्ती भेलाह। लंदनसँ वापस होमक क्रममे ओ जर्मनीमे तीन मास बितौलनि आ ओ बॉन (जर्मनी)

• विश्वविद्यालयमे अर्थशास्त्र विषयक विशेष अध्ययन कयलिन। 8 जून 1927 कँ हुनका कोलंबिया विश्वविद्यालयसँ पीएच. डीक उपाधि सेहो प्राप्त भेलनि।

डा. अंबेदकर 1935 मे गवर्नमेंट लॉ कालेजमे प्रिंसिपल नियुक्त भेलाह, जे ओ ओहि पद पर दू वर्ष धरि रहलाह। मुंबईमे ओ एकटा पैघ घर बनौलनि आ व्यक्तिगत पुस्तकालयमे पचास हजारसँ बेसी पुस्तकक संग्रह कयलनि। पीड़ा वेदना हुनका पाछू लगले रहनि। पत्नी रामाबाईक देहावसान ओही वर्षमे भऽ गेलनि। 1936 मे ओ इंडिपेंडेंट (स्वतंत्र) लेवर पार्टीक स्थापना कयनलि, आ ई पार्टी 1937क सेंट्रल लेजीसलेटिव एसेम्बली (केन्द्रीय विधाई विधानसभा) चुनावमे पन्द्रह सीट पर कब्जा जमौलक। ओही वर्षमे ओ जातिक समाप्ति (एनीहिलेशन ऑफ कास्ट) नामक पुस्तकक प्रकाशन करौलनि। ओ अपन पुस्तकमे हिन्दू धार्मिक नेताक आ जातिप्रथाक कटु आलोचना कयलनि। क्रांतिकारी स्वभावक डा. भीमराव अस्पृश्य समुदाय 'हरिजन' नाम पर विरोध प्रकट कयलनि। गांधीजी एहि समुदायक नाम हरिजन रखने छलाह। ओ रक्षा सलाहकार समिति आ वाइसरायक कार्यकारिणी परिषदक सदस्य 'लेवर मिनिस्टर' (श्रममंत्री) क रूपमे रहल छलाह।

ओ 1941 सँ 1945 क बीच कतेको विवादास्पद पुस्तक सभक प्रकाशन करौलनि, जाहिमे पाकिस्तान पर विचार (थाट्स आन पाकिस्तान) सम्मिलित अछि। भीमराव एहि पुस्तकक माध्यमसँ पाकिस्तानमे पृथक मुस्लिम देश बनेबाक मुस्लिम लीगक मांगकेँ जोरदार ढंगसँ आलोचना कयलनि।

15 अगस्त 1947 कँ जखन भारत स्वतंत्र भेल तँ डा. अंबेदकर कांग्रेसनीत सरकारमे प्रथम लॉ (कानून) मंत्रीक कार्यभार ग्रहण कयलनि। 29 अगस्तकेँ डा. अम्बेदकर भारतीय संविधान प्रारूप कमिटीक चेयरमैन नियुक्त भेलाह। हुनका ई भार देल गेलनि जे ओ स्वतंत्र भारतक नव संविधान लिखथि। भारतीय संविधानक प्रारूप तैयार करयमे हुनका अपन सहयोगी लोकनि आ समकालीन पर्यवेक्षक लोकनिक सभक प्रशंसा प्राप्त भेलनि। संविधान सभामे 26 नवम्बर 1949 कँ संविधानक स्वीकृति भेटि गेलैक, मुदा 1951 मे हिन्दु कोड बिल संसदमे स्वीकृत नहि भेलाक कारणेँ ओ मंत्रिमंडलसँ त्याग-पत्र दऽ देलनि।

सिद्धांतवादी डा. अंबेदकर 1952क लोकसभा चुनावमे निर्दलीय प्रत्याशीक रूपमे चुनाव लड़लनि, किन्तु ओ चुनावमे पराजित भऽ गेलाह। तदुपरांत, ओ मार्च 1952 मे राज्यसभाक सदस्य मनोनीत भेलाह जे ओ मृत्युपर्यंत रहलाह।

चमत्कारिक व्यक्तित्ववला बाबा साहेब सामाजिक रूढ़िवादिताक विरोधमे दलित बौद्ध आंदोलनक शुरुआत कयलनि आ एहि क्रममे ओ 1950 श्रीलंका (तत्कालीन सिलौन) मे आयोजित बौद्ध विद्वान एवं संत सभक सम्मेलनमे सम्मिलित भेलाह। बौद्ध धर्ममे परिवर्तनक एकटा योजना बनौलनि, तकरा लेल ओ 1954 मे दू बेर बर्मा गेलाह। रंगूनमे आयोजित तृतीय विश्व फेलोशिप बौद्ध सम्मेलनमे भाग लेलनि आ ओ 1955 मे भारतीय बौद्ध महासभाक गठन कयलनि, जकरा ओ 14 अक्टूबर 1956 मे भारतीय बौद्ध सोसाइटीमे परिवर्तित कयलनि। तत्कालीन समाजमे व्याप्त अस्पृश्यता एवं सामाजिक भेदभावक विरोधमे जनजागरण करबामे हुनक महत्वपूर्ण भूमिका रहलनि।

जाज्वल्यमान नक्षत्र भीमरावक पहिल पत्नीक देहावसानक उपरांत, दोसर विवाह सवितासँ कयलनि। हुनक पत्नीक नाम विवाहसँ पूर्व, शारदा कबीर रहनि, जे जन्मसँ ब्राह्मण छलीह, मुदा ओ बौद्ध धर्म स्वीकार क' लेने रहथि। मधुमेहसँ पीड़ित डा. अंबेदकर जूनसँ अक्टूबर 1954 धरि बिछावन पकड़ने रहलाह आ अंतत: हुनक निधन 6 दिसम्बर 1956 कें दिल्लीमे भऽ गेलनि आ दाह-संस्कार बौद्ध रीति-रिवाजसँ 7 दिसम्बर 1956 कें चौपाटी (मुंबई) मे संपन्न भेलनि। अंबेदकर स्मारक हुनक दिल्ली स्थित अलीपुर रोडमे स्थापित कयल गेल आ हुनक जन्म तिथि 14 अप्रैलकें सार्वजनिक अवकाशक संग अंबेदकर जयंतीक रूपमे मनाओल जाइछ। वरदपुत्र आ कुशाग्र बुद्धिक डा. अंबेदकरकें 1990 मे मरणोपरांत, भारतक सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारतरत्न' सँ सम्मानित कयल गेल। 'भारतरत्न' सम्मान डा. भीमराव अंबेदकरकें मुइलाक करीब तैंतीस वर्षक उपरान्त सम्मानपूर्वक देल गेल, जे एकटा इतिहास छैक।

प्रगतिशीलता आ सामाजिक जागरूकताक प्रतीक डा. भीमराव अंबेदकरक विषयमे ई पाँती सटीक अछि :

'लीक-लीक गाड़ी चलय
लीकी चलय कपूत
लीक छाड़ि, तीनू चलय
शायर, सिंह, सपूत'

संघर्षमय जीवनसँ अर्जित उपलब्धि, ख्याति, यश, सम्मान आ प्रतिष्ठा चिर-अवधि धरि

चिरस्मरणीय रहैत अछि आ ई कथ्य महान विधिवेत्ता आ 'भारतरत्न' डा. भीमराव अंबेदकर संग घटित होइछ।

बहुआयामी व्यक्तित्वक डा. अंबेदकर स्वतंत्र भारतक शान-मान-आन रहथि। ओना हुनक दैहिक शरीर 6 दिसम्बर 1956 कें पंचतत्वमे भ' गेलनि, मुदा हुनक कीर्ति, पराक्रम, मेधा आ स्थापित मान्यता भारतक जनमानसमे विद्यमान अछि आ युग-युग धरि बनल रहत। तैं तँ कहल जाइछ जे 'यशस्वी स: जीवति।'

शब्दार्थ

अस्पृश्य:	-	अछूत
अंकुश:	-	नियंत्रण
ट्यूशन	-	खानगी पढ़ाई
रूढ़िवादिता	-	परम्परावादी
वरदपुत्र आ कुशाग्र	-	सरस्वतीपुत्र या मेधावी
चिरस्मरणीय	-	वेशी दिन धरि, स्मरणीय
जनमानस	-	जनताक मान

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'भारतीय संविधान निर्माता डा. बी. आर. अंबेदकर' क रचयिता छथि।

(क) भाग्यनारायण झा (ख) तारानन्द वियोगी

(ग) अशोक (घ) उमाकान्त

(ii) भाग्यनारायण झाक रचना अछि।

(क) क्रैक

(ख) भारतीय संविधान निर्माता डा. बी. आर. अंबेदकर

(ग) भोजन

(घ) चन्द्रमुखी

रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू -

(i) जीवनमे उतार-चढ़ाव ..... नियम छैक।

(ii) महार जाति ..... बूझल जाइत रहैक।

(iii) प्रतिभावान अंबेदकर 1912मे अर्थशास्त्र आ ..... मे डिग्री हासिल कयलनि।

शुद्ध-अशुद्धलेँ चिह्नित करू -

(i) अंबेदकर वंशज दीर्घ अवधि धरि ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनीक सेनामे कार्यरत रहथि।

(ii) हुनक गामक नाम रहनि अहमदनगर।

(iii) हुनका 1916 ई0 मे पीएच. डी. उपाधि भेटलनि।

(iv) 1952 के लोकसभा चुनावमे ओ विजयी भेलाह।

(v) हुनक निधन 1960मे भऽ गेलनि।

2. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) डॉ. अंबेदकरक जन्म कहिया आ कतऽ भेलनि ?

(ii) भीमरावसँ भीमराव अंबेदकर कोना भेलाह ?

(iii) संयुक्त राष्ट्र अमेरिकामे उच्च शिक्षा अध्ययन हेतु के हुनका छात्रवृतिक व्यवस्था कयने छलाह ?

(iv) पीएच. डीक उपाधि हुनका कहिया भेटलनि ?

(v) डॉ. अंबेदकर संविधान प्रारूप कमिटीक चेयरमैन कहिया नियुक्त कयल गेलाह ?

3. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) डॉ. भीमराव अंबेदकरक जीवनी संक्षेपमे लिखू।

(ii) पठित पाठक आधार पर डॉ. अंबेदकर जीवनीक वर्णन करू।

(iii) डॉ. अंबेदकर प्रतिभाक संबंधमे अपन विचार व्यक्त करू।

(iv) भारतक संविधान निर्माणमे हिनक भूमिकाक वर्णन करू।

(v) बौद्ध धर्मक प्रति हिनक आस्था केहन छल ? ओकर प्रभाव हिनका पर केहन पड़ल ?

4. निम्न पाँतीक सप्रसंग व्याख्या करू:

(i) 'लीक-लीक गाड़ी चलय
लीकी चलय कपूत
लीक छाड़ि, तीनू चलय
शायर, सिंह, सपूत'

(ii) 'यशस्वी सः जीवति '

गतिविधि-

(i) भारतक सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारतरत्न' सँ सम्मानित अंबेदकरक अतिरिक्त आन सम्मानित लोकनिक सूची बनाउ आ हुनका लोकनिक योगदानक सन्दर्भमे वर्गमे विचार-विमर्श करू।

(ii) छात्र वर्गमे अंबेदकर प्रसंग आन-आन रचनाक वाद-विवाद क्वीज प्रतियोगिता आयोजित करथि।

(iii) छात्र वर्गमे अंबेदकर जीवनसँ सम्बन्धित एकांकीक मंथन करथि।

(iv) छात्र विद्यालयमे अंबेदकर जयंती पर अंबेदकरक विभिन्न आयाम पर सेमिनार आयोजित करथि।

निर्देश-

(i) शिक्षकसँ अपेक्षा जे डॉ. अंबेदकरक संगहि आनो महापुरुषक जीवनक प्रेरक प्रसंगसँ छात्रकेँ परिचित करावथि।

(i) शिक्षक छात्रकेँ डा. अंबेदकर जीवनसँ प्रेरित भऽ जीवनमे सीख लेबाक हेतु अनुप्राणित करथि।

(iii) विद्यालयक समारोहक अवसर पर शिक्षकसँ अपेक्षा जे अंबेदकरक जीवनसँ संबंधित फोटो प्रर्दशनी आयोजित करथि।